बाल सहगान



विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

बाल-सहगान

[बाल-प्रिय गीतों का संकलन]

लेखक

विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

प्रकाशक

मधु प्रकाशन

42, ताशकन्द मार्ग, इलाहाबाद-211001

प्रकाशक :

मधु प्रकाशन

४२, ताशकंद मार्ग,

इलाहाबाद–२११००१

प्रथम संस्करण : १९८३

मूल्य : पाँच रुपये

क्रम

प्रकाशकीय

'बाल महगान' में संकलित कविताएँ बालकों द्वारा सामूहिक गान के उद्देश्य से प्रेरित होकर लिखी गई हैं। सामूहिकता, सहकारिता और परस्पर सौहार्द की भावना को बढ़ावा देना तो इनका अभिप्रेत है ही, विषय-वस्तु की दृष्टि से भी ये कविताएँ बालकों को प्रेरणा-प्रद सिद्ध होंगी। मातृभूमि-प्रेम और राष्ट्रीय-भावना की पृष्ठभूमि में लिखी गई इन कविताओं में देश के ऐसे अनेक उत्साही, शूर-वीर और आत्म-बलिदानी बालकों के कार्यों का संकेत है जो अपने-आप में अजस्र प्रेरणा के स्रोत हैं। ध्रुव, प्रह्लाद, लव-कुश, कृष्ण, अभिमन्यु, भरत, एकलव्य, प्रताप, शिवा जी, गाँधी, नेहरू, सुभाष आदि नामों के साथ कितनी ही प्रेरक और भावोन्मेष-कारिणी गाथाएं जुड़ी हुई हैं। उनकी पुनरावृत्ति से हमारा मन ऊबता नहीं। ये नाम हमारे लिए पुनः-पुनः प्रणम्य और चिर-स्मरणीय हैं।

'बाल सहगान' की कविताओं से परोपकार, दया, प्रेम, शान्ति, सहिष्णुता, धैर्य और आत्मसंयम की प्रवृत्तियों को भी प्रोत्साहन मिलता है। भाषा की सरलता और प्रवाहमय गीति-शैली कविताओं को सहज पठनीय बनाती है।

विश्वास है, देश की भावी आशा हमारे नन्हें-मुन्नों को 'बाल-सहगान' की कविताएँ पसंद आएँगी और उनके जीवन को अभीष्ट दिशा में ले जाने में वे सहायक बनेगी।

—प्रकाशक

दो शब्द

बालोपयोगी गीत संकलन 'बाल सहगान' प्रस्तुत है। इन गीतों को बालक सामूहिक रूप से गा सकते हैं। विद्यालयों तथा विभिन्न समारोहों में भी इनका सस्वर पाठ किया जा सकता है। यदि बाल सहगान बच्चों के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ तो अपना प्रयास सफल समझूँगा।

—कवि



वीर बालक

हम वीर साहसी बालक हैं।

हमने भेदा है चक्र-व्यूह,
हम से यम भी तो हारा है।
बस सोचा हमने एक बार,
बन गया अटल ध्रुवतारा है ।।

जो कह देते पूरा करते,
हम अपने प्रण के पालक हैं।
हम वीर साहसी बालक हैं।।

झुलसे हैं कभी न लपटों से,
गिर कर पहाड़ से मर न सके।
चुन दिए गये दीवालों में,
पर मुँह से आहें भर न सके।।

सम्मान सज्जनों को देते,
दुष्टों के कुल के घालक हैं।
हम वीर साहसी बालक हैं।

हमने सिंहों के दाँत गिने,
भगवान राम को जीता है।
गोरा बादल बन कर निकले,
जब गूँजी रण की गीता है॥

हम सब ही तो आगे बढ़कर,
बनते युग के संचालक हैं।
हम वीर साहसी बालक हैं॥

हमने दाहिना अँगूठा दे,
गुरु की दक्षिणा चुकाई है।
नाचे हैं विषधर नागों पर,
सब को लीला दिखलाई है॥

भावी भारत की नौका के;

हम आने वाले चालक हैं।

हम वीर साहसी बालक हैं ।।

———



हम बाल वीर हम बाल वीर

हम बाल वीर, हम बाल वीर ।

हम भारत माता के सपूत ।
हम देशभक्त हम शान्ति दूत ।।
साहस से करते काम सभी,

होते न कभी भी हैं अधीर ।
हम बाल वीर, हम बाल वीर ।।

हम सबके मन में नव उमंग,
हम सबके तन में नव तरंग ।।
हम आगे ही बढ़ते जाते,

चलते हैं जैसे तेज तीर ।
हम बाल वीर, हम बाल वीर ।।

हम बाधाओं मे लड़ जाते ।
संकट में भी हैं मुस्काते ।।
निज मातृ-भूमि की रक्षा में,

कर देते हैं अर्पित शरीर,
हम बाल वीर, हम बाल वीर ।।

———



नन्हें मुन्ने बच्चे

हम नन्हें मुन्ने बच्चे हैं।

हम कोमल भोले भाले हैं,
सुन्दर सुकुमार निराले हैं।
हम छोटे - छोटे हैं तो क्या,
हम सब ही हिम्मत वाले हैं ।।

हम नहीं कभी भी घबराते,
हम अपने प्रण के सच्चे हैं।
हम नन्हें मुन्ने बच्चे हैं ।।

हम प्रेम देश से करते हैं,
दुखियों के दुख को हरते हैं।
अवगुण से रहते दूर सदा,
गुण अपने अन्दर भरते हैं ।।

हम नहीं बोलते झूठ कभी,
हम सीधे सादे अच्छे हैं।
हम नन्हें मुन्ने बच्चे हैं ।।

हम आगे बढ़ते जाते हैं,
वीरता सदा दिखलाते हैं।
दुश्मन कितना भी प्रबल रहे,
हम विजय निरन्तर पाते हैं ।।

हम नहीं लक्ष्य से हटते हैं,
हम नहीं ध्येय के कच्चे हैं।
हम नन्हें मुन्ने बच्चे हैं ।।

———



बाल वीर

हम भारत के बाल वीर हैं।

हम सब साहस के पुतले हैं,
नहीं किसी से डरने वाले।
मुश्किल से मुश्किल कामों को,
हँस-हँस कर ही करने वाले ॥
कितनी भी विपदाएँ आएँ, होते नहीं कभी अधीर हैं।

हम भारत के बाल वीर हैं ॥

प्रलय मचे चाहे धरती पर,
दुःखों के पहाड़ भी टूटें।
रुकना हमने कभी न सीखा,
प्राण भले ही अपने छूटें॥
आगे ही हम बढ़ते जाते, चलते जैसे तेज तीर हैं।

हम भारत के बाल वीर हैं॥

हम सब अपनी सीमाओं की,
करते ही रहते रखवाली।
नहीं कभी भी मिटने देते,
भारत माँ के मुँह की लाली॥
स्वतंत्रता की ही रक्षा में, करते न्यौछावर शरीर हैं।

हम भारत के बाल वीर हैं॥

दिया जिन्होंने बलि स्वदेश पर,
उन्हें कभी हम भूल न पाते।
हम उनके ही आदर्शों को,
अपने जीवन में अपनाते॥
वीर शिवाजी नेता जी की, पकड़ चले हम भी लकीर हैं।

हम भारत के बाल वीर हैं॥



नौनिहाल

हम भारत के नौनिहाल हैं।

हम से ही सुखमय आशाएं,
रखती अपनी भारत माता।
हम ही बनते हैं भविष्य में,
प्रिय स्वदेश के भाग्य विधाता॥
हम युग का निर्माण करेंगे, हम जननी के वीर लाल हैं।
हम भारत के नौनिहाल हैं।

हम जीवन ज्योति जगाएंगे।

जननी की जय-जय गायेंगे।

निज कदम बढ़ाते जाएंगे।

वीरता भरेंगे नस नस में,

हम होंगे सच्चे युद्धवीर।

हम धीर वीर, हम धीर वीर॥

अपना प्रण कभी न छोड़ेंगे।

बाधाओं का मुख मोड़ेंगे।

सम्बन्ध प्रेम से जोड़ेंगे।

निज स्वतंत्रता की रक्षा में,

कर देंगे अर्पित यह शरीर।

हम धीर वीर, हम धीर वीर॥

———



पहरेदार

हम हैं पहरेदार देश के, हम हैं पहरेदार ।

युद्ध चाहते नहीं कभी भी,
शान्ति हमारी नीति ।
हम सारी दुनिया से रखते,
भाई की सी प्रीति ।।

सत्य, अहिंसा, मानवता से, हम करते हैं प्यार ।
हम हैं पहरेदार देश के, हम हैं पहरेदार ।।

हिंसा वालों से हिंसा की,
हम अपनाते राह ।
अन्यायी रह जाय न कोई
यही हमारी चाह ।।

दुष्टों के ही साथ दुष्टता का करते व्यवहार ।
हम हैं पहरेदार देश के हम हैं पहरेदार ।।

कभी नहीं हम मिटने देते,
भारत माँ का मान ।
स्वतंत्रता की ही रक्षा में,
हो जाते बलिदान ।।

सीमाओं पर खड़े हुए बन लोहे की दीवार ।
हम हैं पहरेदार देश के हम हैं पहरेदार ।।

जो भी आगे बढ़ कर करता,
लड़ने को मजबूर ।
हथियारों के साथ उसे भी,
करते चकनाचूर ।।

कोई शत्रु नहीं बच पाता, उठती जब तलवार ।
हम हैं पहरेदार देश के हम हैं पहरेदार ।।



बाल सिपाही

हम स्वदेश के बाल सिपाही भारत के रखवाले हैं।

हम स्वतंत्रता के प्रेमी हैं,
सदा शान्ति मे रहते हैं।
बैरी के अत्याचारों को,
नहीं कभी भी सहते हैं।।

अपनी सीमाओं की रक्षा करते हम मतवाले हैं।
हम स्वदेश के बाल सिपाही भारत के रखवाले हैं।।

हम अभिमन्यु, भरत, लव-कुश हैं,
पाठ शूरता का पढ़ते ।
गोरा-बादल के समान ही,
निर्भय हो आगे बढ़ते ॥

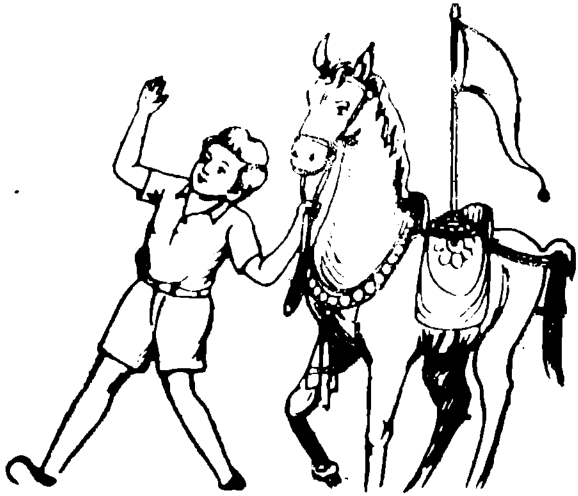
धीर, वीर, बलवान, साहसी, अद्भुत हिम्मत वाले हैं ।
हम स्वदेश के बाल सिपाही, भारत के रखवाले हैं ॥

गगन गिरे हो जाये प्रलय भी,
हम न कभी रुकना जानें ।
चाहे सम्मुख काल खड़ा हो,
हम न कभी झुकना जानें ॥

मातृ-भूमि की बलि वेदी पर, प्राण चढ़ाने वाले हैं ।
हम स्वदेश के बाल सिपाही, भारत के रखवाले हैं ॥

कोई संकट पड़े देश पर,
हम उसको हर लेते हैं।
तन-मन-धन सब कुछ न्योछावर,
हँस कर ही कर देते हैं॥

अमर शहीदों के दुनिया में, होते काम निराले हैं।
हम स्वदेश के बाल सिपाही, भारत के रखवाले हैं॥



बाल प्रतिज्ञा

माँ ! हमें न समझो शिशु कोमल, हम रण में लड़ने जायेंगे।

भारत की यह धरती पावन,
इसकी अप्रतिम कहानी है।
गाता इसकी गौरव-गाथा,
गंगा-यमुना का पानी है।।

इसकी महिमा, गरिमा के हित अपना कर्त्तव्य निभायेंगे।
माँ, ! हमें न समझो शिशु कोमल, हम रण में लड़ने जायेंगे।।

देवी स्वतंत्रता की हमको,
प्राणों से बढ़कर-प्यारी है ।
उसकी रक्षा में ही अर्पित,
तनमन सम्पदा हमारी है ।।

बापू की थाती को अन्तिम दम तक हम लोग बचायेंगे ।
माँ ! हमें न समझो शिशु कोमल, हम रण में लड़ने जायेंगे ।।

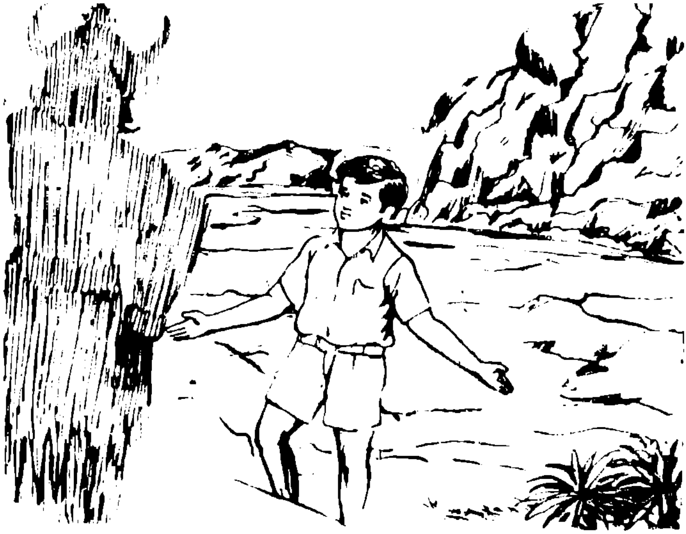
हम लवकुश जैसे वीर व्रती,
ध्रुव के समान प्रण पालक हैं ।
गोरा बादल अभिमन्यु सदृश,
हम सब स्वदेश के बालक हैं ।।

हम में कितना बल विक्रम है, यह दुनिया को दिखलायेंगे ।
माँ ! हमें न समझो शिशु कोमल हम रण में लड़ने जाएंगे ।।

चाहे जितना भीषण और हो,
हम नहीं कभी डर सकते हैं।
भारत माता की सेवा में,
हँसते हँसते मर सकते हैं ।।

बैरी के अत्याचारों का जग से अस्तित्व मिटाएंगे।
मां, ! हमें न समझो शिशु कोमल, हम रण में लड़ने जाएंगे ।।

———



शेर बच्चा

शेर बच्चा देश का हूँ, देश की रक्षा करूँगा।

मातृभू प्यारी मुझे है,
पाल कर जिसने बढ़ाया।
पी रहा जिसका अमृतजल,
और जिसका अन्न खाया॥

ऋण मुझे उसका चुकाना, ध्यान यह मन में धरूँगा।
शेर बच्चा देश का हूँ, देश की रक्षा करूँगा॥

चाहता स्वाधीन रहना,
मुक्ति का मैं तो पुजारी ।
अमर मैं इसको बनाऊँ,
बस यही इच्छा हमारी ।।

राष्ट्र-हित जीवित रहूँगा, राष्ट्र-हित में ही मरूँगा ।
शेर बच्चा देश का हूँ, देश की रक्षा करूँगा ।।

हो भले ही घोर संकट,
मैं सदा हँसता रहूँगा ।
गिर पड़े आकाश चाहे,
पन्थ बलि का ही गहूँगा ।।

काल भी यदि सामने हो, मैं नहीं मन में डरूँगा ।
शेर बच्चा देश का हूँ, देश की रक्षा करूँगा ।।

शत्रु को दूंगा चुनौती,
पैर यदि उसने बढ़ाये ।
पार सीमा के न होगा,
शक्ति वह कितनी लगाए ।।

त्याग तन मन धन सभी मैं, कष्ट भारत के हरूँगा ।
शेर बच्चा देश का हूँ, देश की रक्षा करूँगा ।।

———



शूर वीर सन्तान

हम स्वतंत्र भारत माता की, शूरवीर सन्तान हैं ।

हम नन्हें मुन्ने बच्चे हैं, पर हम में उत्साह है ।
जीवन में आगे बढ़ने की, हमें हमेशा चाह है ।।

हम सब अपनी मर्यादा का, रखते हर दम ध्यान हैं ।
हम स्वतंत्र भारत-माता की, शूरवीर सन्तान हैं ।।

भय का भूल स्वप्न में भी हम, कभी न लेते नाम हैं।
करते साहस से ही सारे, इस दुनिया के काम हैं॥

दुख-सुख शोक-हर्ष सब में ही, रहते एक समान हैं।
हम स्वतंत्र भारत-माता की, शूरवीर सन्तान हैं॥

चलकर रुकते नहीं बीच में, पथ कितना विकराल हो।
झुकते नहीं किसी के आगे, खड़ा भले ही काल हो॥

जाने नहीं कभी भी देते, हम अपना सम्मान हैं।
हम स्वतंत्र भारत-माता की, शूरवीर सन्तान हैं॥

लहराती है ध्वजा हमारी, नभ में पूरी शान से,
विचलित नहीं कभी भी होते, हम सब अपनी आन से ।।

अडिग हमारे ध्येय, अडिग विश्वास, अडिग अरमान हैं ।
हम स्वतंत्र भारत माता की, शूरवीर सन्तान हैं ।।

प्राणों से भी बढ़कर हमको, मातृ-भूमि से प्यार है ।
इसकी रक्षा में ही अर्पित, तन-मन-धन, परिवार है ।।

हम स्वदेश की बलि वेदी पर, हो जाते बलिदान हैं ।
हम स्वतंत्र भारत माता की, शूरवीर सन्तान हैं ।।

म सम्पूर्ण विश्व को देते, अमर शान्ति संदेश हैं।
द्ध रोकने का ही जग में, करते यत्न विशेष हैं॥

पर हम से जो भिड़ने आता, लेते उसकी जान हैं।
हम स्वतंत्र भारत माता की, शूरवीर सन्तान हैं॥



किशोर

हम हैं भारत के नव किशोर।

हम ही होंगे आगे चलकर,
भावी स्वदेश के कर्णधार।
हम पर भविष्य में आयेगा,
नव निर्माणों का कठिन भार॥

हम अपने श्रम से लायेंगे, नूतन विकास नया भोर।
हम हैं भारत के नव किशोर॥

हम होंगे जनता के सेवक,

जन प्रतिनिधि जन नायक महान् ।

सर्वदा मान्य हमको होगा,

जनतन्त्र तथा निज संविधान ।।

विचलित न न्याय-पथ से होंगे, कितना भी आवे कष्ट घोर ।

हम हैं भारत के नव किशोर ।।

हम स्वतंत्रता की रक्षा में,

देंगे तन-मन-धन सभी त्याग ।

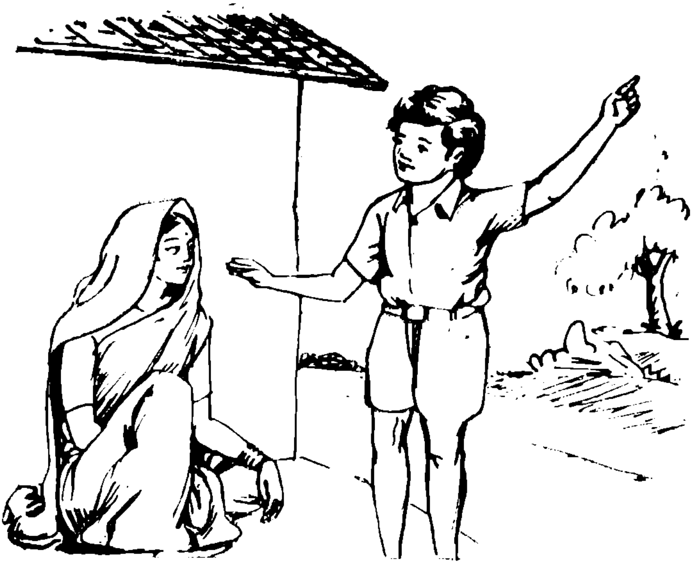
निज मातृभूमि से रक्खेंगे,

प्राणों से बढ़ स्नेहानुराग ।।

हम फूलों से भी हैं कोमल, पाषाणों से भी हैं कठोर ।

हम हैं भारत के नव-किशोर ।।

———



साहसी सपूत

हम अपनी भारतमाता के, हैं साहसी सपूत ।

मातृ भूमि की सेवा ही है,
एक हमारा धर्म ।
स्वाभिमान की रक्षा करना,
है जीवन का मर्म ॥

हम स्वदेश-हित करते अर्पित,
धन-सम्पदा प्रभूत ।
हम अपनी भारत-माता के,
हैं साहसी सपूत ॥

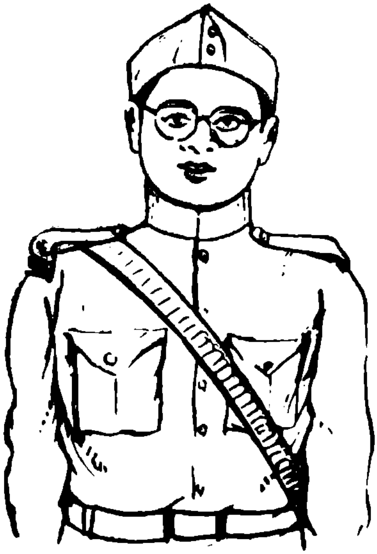
भरा हमारे हृदयों में है,
ओज और उत्साह ।
हममें है धीरता, वीरता,
गम्भीरता अथाह ॥

हम रखते अपार बल विक्रम,
पौरुष, शक्ति अकूत ।
हम अपनी भारत-माता के,
हैं साहसी सपूत ॥

अपनाते हम निर्भयता के,
भाव परम ही पूत।
हम अपनी भारत-माता के,
हैं साहसी सपूत॥

बढ़ते जाते हैं हम पथ पर,
बिछे भले हों शूल।
कर देते अपने अरियों को,
धरती से निर्मूल॥

बांधे है हमको आपस में,
सुदृढ़ प्रेम का सूत।
हम अपनी भारत-माता के,
हैं साहसी सपूत ।।



हम बालक युग-निर्माता हैं

हम बालक युग-निर्माता हैं।

कोमल गुलाब जैसे हम सब,
भारत की भावी आशा हैं।
निज देश-जाति के कर्णधार,
माँ के मन की अभिलाषा हैं।।

उज्ज्वल भविष्य के सपने हैं, भारत के भाग्य विधाता हैं।
हम बालक युग-निर्माता हैं ॥

हम मातृ-भूमि की रक्षा में,
अपना तन-मन-धन देते हैं।
जो हमसे भिड़ आता है,
उसका जीवन हर लेते हैं ॥

जो शरण चाहता है आकर, हम उसके आश्रय-दाता हैं।
हम बालक युग-निर्माता हैं ॥

हम सत्य-अहिंसा के प्रेमी,
हम केवल शांति-पुजारी हैं।
जो शांति भंग करता उससे,
करते रण की तैयारी हैं ॥

किससे कैसा व्यवहार करें, हम इसके सुन्दर ज्ञाता हैं।
हम बालक युग-निर्माता हैं ॥

हम ही बनते गांधी-नेहरू,

बनते सुभाष सेनानी हैं ।

बन जाते वीर प्रताप, शिवा,

आजाद, भगत बलिदानी हैं ॥

सच्चे स्वदेश के हम प्रहरी, निज स्वतंत्रता के त्राता हैं ।

हम बालक युग-निर्माता हैं ॥